

# जानमंत्र टुडे

वर्ष: 13

अंक: 39

देहस्थान, बुधवार, 02 मार्च, 2022

पृष्ठ: 08

## बढ़ते तापमान में सज्जियों की संरक्षित खेती में निरंतर करते रहे सिंचाई: डॉ राजीव

दीपक गौड़ (जलाल टुडे)

**कानपुर:** घंटाशोखार आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साक भाजी अनुभाग कानपुर में सिंचत सब्जी उत्पादन केंद्र में शोध वर्क देख रहे साकभाजी संस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बढ़ी सेवी हो रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों पिण्डी रूप से टमाटर एवं शिनला मिर्च में पुष्टन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है।

संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्टन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती है इसलिए यह



आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई हस्त प्रबाहर करे कि जिससे पीछों को भूमि से नभी मिलती रहे तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे कोणर उपकरणों का भी प्रयोग करते

रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नभी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19 :19 का 1.5 से 2% घोल का पर्याप्त

छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पादृप के भाव्यन से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें ताकि पीछों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पीछों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूखाहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्याप्त छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा यदि सूखाहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके रूपान पर सामानिक का पर्याप्त छिड़काव कर सकते हैं।

डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर बर्फन समय में रोपन, जरेला, तरोर्झ आदि लकड़ा वर्गी फलालों की बुवाई रखिए

जापवा जलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट बर्मीकुलाईट एवं परलाइट का उत्तराल अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोप्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पीछे रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिही रक्षित माल्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पीछे तैयार हो जाती है।

खीरा की पार्फेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा-8, मस्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध है जिसमें रभी फूल भादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उनावन औपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।



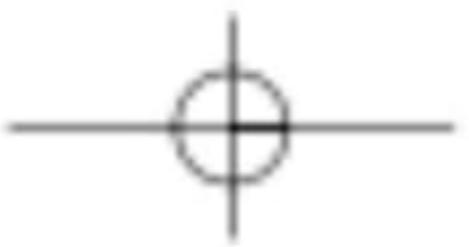
FOLLOW US

[www.janmattoday.in](http://www.janmattoday.in)



[facebook.com/janmattoday.in](https://facebook.com/janmattoday.in)

जनमत टुडे



# ମୁଖ୍ୟ କାନ୍ତି

[aswaroop.in](http://aswaroop.in)

अस्पताल में भर्ती करने पर वा वा अस्पताल नुस्खे (32) नीचला के आनंद विहार का सही बाहर वा। यह केम्पो में मरिया वर

या। बर्ट की चारों में आने से वह गंधीर कृषि सी हुल्ला गता था। उसी हुल्ला के लिए अम्माजाल में भाँई कराया गता था। इन्हरे

युद्धाभियोग से चहले लड़न्हीम में अरने अधिकारीयों की अपनी गौतम के लिए विम्नेदार जागरूक का।

करने से एक बात तो साक ही नहीं है कि वह भी कहीं न कहीं इस प्रश्नाचार में दूरी रखने की शरणिल है। यही केंद्रीय के सचिव जातीत्व वैश्व ने बताया कि उन्हें कार्यपाली संघर्ष की नीटिया जारी कर दिया गया है, सेकिन उन्हें कोई तभी लक्ष कीर्ति ज्ञान नहीं दिया

गर्मी के मौसम में साल्पियों की संरक्षित खेती में होती हैं, समसामयिक क्रियाएं

कानपुर। लौगिक के साथ भावी अनुभव कानपुरमें जिवल लंबी उच्छृङ्खला कोड में शीघ्र कार्य देख रहे साफ़-भावी समर्थकद्वारा गतीज द्वारा कलात्मक इक तामनान बाही तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित लांबों के अंदरांत जापानी हो रही साज्जी चलती विशेष रूप से दमादर एवं शिष्यता विवेद में पुष्ट एवं फल विकास की प्रक्रिया की व्यापित कर सकता है। संरक्षित लांबों में इन लकड़ी की अर्थात् लंबी होने के कारण पुस्तक एवं पत्र विकास दोनों प्रक्रिया मध्य लाच जाली रहती है इनलिए यह आवश्यक है कि विमान धार्य नियंत्रण मिशन करते रहे तथा मिशन इस प्रकार करें कि विमान लांबों की भूमि से नवी विस्तीर्ण रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित लांबों के अंदरांत सर्वे कीरण उपकारी का भी प्रयोग करते रहे तिवमसे लांबों के अंदर वर्द्धमान वर्षीय रानी रहेंगी तथा बहुत लामान का इतिहास उभाव फलतों पर नहीं पोड़गा। ही गतीज द्वारा यह भी कलात्मक गति कि इन पीले, १९०१०-१९१० का १.५ से २.५ लील का वर्षीय डिफलेक्शन की तथा ट्रफल लिंबार्ड लाइप के युवाओं की प्रत्येक लकड़ा एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पीले जो नियंत्रित कार से नुसाक मिलती रहे। इनहोने यह भी कहा है कि पीलों को हरा-भरा खाए रखने के लिए लगभग १२ से १५ दिन के

अंतर्राष्ट्रीय सुन्दरी प्रौद्योगिकी विद्या के लिए अवधारणा होगी।



क्या पर्सीन लिंगाकाल कर्ते जो लालाद्वय कहाने स्मैथे अलाका अलम से नसीरी लिंग करते

की जा सकती है। नारी सेवा करने के लिए, बोकोहिंट, बम्पुल्साइट, और लालडॉट का उपयोग अनुसार का प्रश्न सेवा कर दी नहीं में भवकल कोडो को मुजाह़िद कर देते हैं। यह सामान्यतः समाधान 20 से 22 दिन में पौधे गेपाई के लिए, डिवाइट हो जाते हैं। यह एक मिट्टी गहिर नालाम है जिसमें ऊत गुबारता की पौधे सेवा हो जाती है। खींच की याचिनीकार्पिक प्रक्रिया जैसे पूर्ण शील रहित खींच- 6, यल्टीएटर, डिल्टन आदि व्याकार में उपलब्ध है। डिल्टमें सभी पूर्ण नाला ही उपलब्ध हैं। लाल काढ़ी मैंगला में फल लगते हैं जिनको डिमान उमड़ने अपनी आर्थिक मिलाति को सुनहरा कर सकते हैं।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | उत्तर प्रदेश @janexpressnews

ट्रैल-डीजल! टेक्स में कटौती करके... 12 ◀ ▶ छठे चरण में सीएम योगी की प्रतिष्ठा का इन्तज़ा... 05



लक्षण  
लंबाई: 13 | अंक: 140  
गुणवत्ता: ₹ 3.00/-  
पेज: 12  
लक्षण | कुलवर | 03 अर्ध, 2022

# जन एक्सप्रेस

'बढ़ते हुए तापमान से सब्जी-फल फसल पर पड़ेगा प्रभाव'



**जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर।** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित साक भाजी अनुभाग के सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ. राजीव ने बढ़ते तापमान को देखते हुए कहा कि तेजी से बढ़ते हुए तापमान से संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया बाधित हो सकती है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान इस प्रकार निरंतर सिंचाई करते रहे जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। उन्होंने बताया कि एन.पी.के.

19:19:19 का 1.5 से 2 फीसदी घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। जिससे पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। डॉ. राजीव ने कहा कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ड्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है। खीरा की पार्थनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा-6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

# संरक्षित खेती में उगाये टमाटर एवं शिमला मिर्च

## □ गर्मी के मौसम में सब्जियों की संरक्षित खेती किसानों के लिए लाभप्रद

कानपुर, 2 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साक-भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव कुमार ने कहा कि तापमान बढ़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे, जिससे ढांचों के अंदर पर्यास नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. का 1.5 से 2 प्रतिशत घोल का पर्याय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।



कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्याय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्याय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट, एवं परलाइट का अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ड्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं। तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है। जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है। खीरा की पार्थेनोकर्पिंक प्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा-6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं।

जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बढ़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया

जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बढ़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान

# दैनिक नगर छाया आप की आवाज़.....

[www.nagarchhaya.com](http://www.nagarchhaya.com)

पेज -8

'अगर तुम न होते' में अंगद का निगेटिव किटदाट निभाएंगे

## गर्मी के मौसम में सब्जियों की संरक्षित खेती में समसामयिक क्रियाएं



### कानपुर (नगर छाया समाचार)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बढ़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्ट है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्ट है एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती है।

इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 1979 नं 9 का 1.5 से 2 लघोल का पर्याप्त छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित

रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्याप्त छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्याप्त छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाड़स एवं नेट हाड़स आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट, एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ड्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है। जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पुसा, बीज रहित खीरा-6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बढ़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।